BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - ६ठ

प्रो० रंजीत कुमार राम
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

सप्रसंग व्याख्या

चन्द्र रचनावली

1. "सतत तिरहुति देशहित साधन महाजन शरणमें।
करह नेह विदेहपुर वाढ़ि, रामचन्द्रक चरणमे॥"

उ० - प्रस्तुत पद्यांश कविचन्द्र रचित 'मिथिला महिमा' पाठ सँ लेल गेल अछि। ई काव्य चन्द्र-रचनावलीमे संकलित अछि जिनकर सम्पादक छथि- डॉ० विश्वेश्वर मिश्र। कविवर 'मिथिला महिमा' मे मिथिलावासीकेँ सद्ज्ञान दैत छथि - गरीब असहाय केँ प्रति अन्तःकरणमे दया भाव राखू आ दान करू। दोसरक पत्नीकेँ अपन माय समान बुझबाक चाही, दोसरक सम्पत्ति (धन) हरण केँ कखनहु मनमे विचार नहि आनू। तखने अपन देश तिरहुतिक हित होयत। ते देशक जे श्रेष्ठ गुणी

ते वैराग्य जे श्रेष्ठ गुणी साधु कृतिक छवि उनका शरणमे जाऊ। अपना देशसँ प्रेम करू आ सब विदेह नगरक वासी बिकहुँ। प्रभु श्री रामक चरण शरणमे ध्यान लगाउ। एहिमे सबक कल्याण होयत।

2. "पतित उधार नहिं दोसर उपाय हे।
सुयश पताका तुअ जग फहराय है॥"

→ प्रस्तुत पद्यांश 'गंगा स्तुति' शिर्षक काव्य सँ लेल गेल अछि जिनकर रचयिता छवि चंदा छथि। ई काव्य चन्द्र रचनावलीमे संकलित अछि। गंगा स्तुतिक दोसर पदमे गंगाके पतितवान कें रूपमे हुनक अर्चना कवि कैल छथि। हे माता गंगे अहाँक महिमा अगम - अपार अछि। ते देवाधिदेव महादेव अहाँ कें माथ चढ़ौने छथि। हे गंगे अहाँक पावन जलक स्पर्श मात्र सँ पापीक पापक नाश भ जाइत छैक।

अहाँक सुयश पताका जगत भरि फहराइ
अछि। वेद, पुराण सब मे अहाँ महिमाक
वर्णन अछि। अहाँ सर्वगुण सम्पन्न छी,
हे माता हमरा अन्त समयमे नहि बिसरब,
हम त अहाँक पुत्र छिकहुँ। अहाँक स्मरण
मात्र सँ जगत-जीवनक सर्व कल्याण भ
जाइत छैक। जय हो समदर्शी माताक
जय हो।

Sarvajit
2025